रेणु के कथेतर साहित्य में संवेदना और शिल्प

विश्वविद्यालय हिंदी-विभाग

ललित नारायण मिथिला विश्वविद्यालय, कामेश्वरनगर, दरभंगा के मानविकी संकाय की हिंदी-विषयक पी.एच्. डी. उपाधि हेतु प्रस्तावित

शोध-प्रारूप

संकाय-मानविकी

विषय-हिंदी

शोध-निर्देशक

डॉ.सुशील कुमार

सहायक प्राध्यापक (अध्यक्ष हिंदी विभाग)

ए.पी.एस.एम. कॉलेज, बरौनी (बेगूसराय)

शोधार्थी

रूपम कुमारी

पैट क्रमांक- E2209086

पिता- दिलीप कुमार चौधरी

माता- अनिता चौधरी

रेणु के कथेतर साहित्य में संवेदना और शिल्प

1. शोध-विषय का महत्व:

फणीश्वरनाथ रेणु का रचना संसार अत्यंत विस्तृत है उन्होंने साहित्य की किसी एक विधा पर ही अपनी लेखनी नहीं चलाई, अपितु सभी विधाओं में महत्वपूर्ण कार्य किया है। उनके उपन्यास और कहानियाँ साहित्य जगत में महत्वपूर्ण स्थान रखते हैं। 'मैला आंचल' उपन्यास से उनकी महत्वपूर्ण पहचान बनती है तो 'तीसरी कसम', लाल पान की बेगम', 'रसप्रिया' कहानियाँ हिंदी साहित्य की महत्वपूर्ण कहानियों की श्रेणी में शामिल हैं। उनके संस्मरण उनके व्यक्तित्व को समझने में सहायक हैं क्योंकि उनमें रेणु के आत्मानुभव की अभियक्ति है।

रेणु जी ने अपने कथा साहित्य और कथेतर साहित्य में सामाजिक यथार्थ का ही चित्रण किया है। उनके कथेतर साहित्य में भी ग्रामीण समाज के यथार्थ जीवन का ही चित्रण मिलता है। रेणु जी के साहित्य में लोकजीवन और संस्कृति के सभी तत्व विद्यमान हैं। रेणु के साहित्य अध्ययन से तत्कालीन भारत के ग्रामीण जीवन की वास्तविक स्थिति को समझ सकते हैं। उन्होंने कथेतर साहित्य में रिपोतार्ज, संस्मरण, आत्मकथा, निबंध, नाटिका आदि अन्य विधाओं पर भी अपनी लेखनी चलाई है।

रेणु का रिपोतार्ज साहित्य जीवन की वास्तविकताओं को उद्घाटित करते हुए मानवीय संवेदनाओं की चरम सीमा को दर्शाते हैं । उनके रिपोतार्ज जीवनगत वास्तविकताओं को इस प्रकार उद्घाटित करते हैं, जिससे उसके प्रति मानवीय संवेदनाओं का स्वयं ही संचार हो जाता है। उनके रिपोतार्ज साहित्य में मानवीयता के साथ ही युगजीवन की गहराई छिपी दिखती है। उनके रिपोतार्जों में जहाँ यथार्थबोध है, वहीं आम जन की पीड़ा भी विद्यमान है।

रेणु जी ने अपने रिपोतार्ज में यथार्थ के धरातल पर समाज का चित्रण किया है। रेणुजी के रिपोतार्ज 'ऋणजल धनजल' में बाढ़ और सूखे की विभीषिका की जीवंत अभियक्ति है, साथ ही इसमें उन्होंने इस तरह की प्राकृतिक विपदा में भी सुविधावादी लोगों में स्वार्थलुपता की विद्यमानता को बेनकाब किया है। 'श्रुत-अश्रुत पूर्व' रिपोतार्ज बांग्लादेश की मुक्ति संग्राम गाथा पर आधारित है। रेणुजी का 'नेपाली क्रान्ति कथा' रेणु का स्वानुभूति का रिपोतार्ज है। नेपाल की राणाशाही के अत्याचार और

दमन के विरुद्ध जब नेपाल की जनता ने युद्ध छेड़ दिया तब रेणु ने उसमें सशक्त योगदान दिया। नेपाली क्रांति में अपने भोगे हुए यथार्थ का वर्णन रेणु ने 'नेपाली क्रांति कथा' में किया है। 'एकलव्य के नोट्स' रिपोतार्ज दलित चेतना के उभार के साथ-साथ उनकी आंतरिक पीड़ा को मार्मिक ढंग से उभारता है। दलितों की पीड़ा में रेणु की अपनी संवेदना भी शामिल है। किसी भी घटना की तत्कालीन प्रतिक्रिया के फलस्वरूप रिपोतार्ज की शैली सामान्यतः भावावेश प्रधान होती है। रिपोतार्ज डायरी पत्र एवं निबंध शैली में भी लिखे जा सकते हैं।

रिपोतार्ज लेखन की महत्ता इस बात पर निर्भर करती है कि उसमें घटना की प्रामाणिक एवं आत्मीय अभियक्ति हुई है कि नहीं। यह एक बहिर्मुखी विधा है, जो किसी बाह्य घटना पर आधारित होती है। रेणु ने अपने रिपोतार्ज में लोकगीतों का भी भरपूर प्रयोग किया है। प्रतीक एवं बिंबों के प्रयोग के कारण इनके रिपोतार्ज और भी रोचक हो गए हैं।

रेणु का संस्मरण 'समय की शिला' पर हिंदी साहित्य में अपनी एक अलग पहचान के लिए जाना जाता है। संस्मरण हिंदी साहित्य की ऐसी विधा है जिसमें कोई रचनाकार किसी अन्य व्यक्ति के बारे में अपनी स्मृति के आधार पर लिखता है। संस्मरण जिस व्यक्ति के बारे में लिखा जाता है, उस व्यक्ति के चरित्र की कुछ विशेताएँ उसमें अवश्य मिलती हैं इसलिए संस्मरण में रेखाचित्र के भी गुण देखने को मिलते हैं।

संस्मरण में भाषा-शैली का भी विशेष महत्व है। रेणु के संस्मरण में भाषा के कई रूप देखने को मिलते हैं। संस्मरण हिंदी साहित्य की कथात्मक विधा नहीं है फिर भी वे भाषा के अनुरूप नए-नए प्रयोग करने से हिचकिचाते नही हैं। संस्मरण एक ऐसी विधा है जिसकी कोई निश्चित शैली नहीं होती है।

रेखाचित्र विधा में भी रेणु का महत्वपूर्ण स्थान है। 'वन तुलसी की गंध' उनके रेखाचित्रों का संकलन है, जिसमें उनके सत्रह रेखाचित्र संकलित हैं। इस संग्रह का प्रकाशन 1984 में हुआ। हिंदी, बांग्ला, उर्दू, तथा नेपाल के साहित्यकारों एवं साधारण व्यक्तियों पर आधारित ये रेखाचित्र हिंदी के अन्य रेखाचित्रों से भिन्न दिखाई देते हैं। रेणु का समस्त साहित्य साधारण कहे जाने वाले चरित्रों से भरा हुआ है किन्तु उनके रेखाचित्र में साधारण चरित्रों की संख्या अत्यंत सीमित है।

रेखाचित्र में वे पहले वातावरण की रचना करते हैं इसके बाद उस वातावरण में व्यक्ति को रखकर चमत्कार उत्पन्न करते हैं। रेखाचित्र को विश्लेषित करते हुए कहा जाता है कि इनमें स्थिरता होती है

लेकिन रेणु के रेखाचित्र इससे बिलकुल भिन्न दिखाई देते हैं। वे अपने रेखाचित्रों को में किसी भी गंभीर विषय को समझने के लिए एक बिंदु रख देते हैं जिससे सब कुछ स्पष्ट हो जाता है। अपने रेखाचित्रों में वे अधिक विस्तार की तरफ नहीं बढ़ते हैं। वे किसी भी व्यक्ति के विभिन्न पहलुओं की उपेक्षा किसी एक भी पक्ष को अत्यंत बारीकी से चित्रित करते हैं। उनके रेखाचित्रों में वातावरण की प्रधानता दिखाई देती है।

रेणु की प्रसिद्धि कथा साहित्य में भले ही हो किंतु उन्होंने अपनी साहित्यिक यात्रा का प्रारंभ कविता से ही किया। उनकी कविताओं का एकमात्र संग्रह 'कवि रेणु कहे' है। प्रारंभ में वे तुकबंदियाँ करते थे बाद में उन्होंने वसंतोत्सव, होली, राजनीति, व्यक्तिगत, प्रकीर्णक आदि विषयों पर भी कविताएं लिखीं। हिंदी के अतिरिक्त उन्होंने बांग्ला एवं मैथिली में भी कविताएं लिखीं। रेणु की आरंभिक कविताएं साप्ताहिक पत्र 'विश्वमित्र' में छपी थीं। उनकी कविता 'अपने जिले की मिट्टी' विभाजन की त्रासदी पर आधारित है। रेणु के गद्य-गीत 'ओ लाल आफताव' का प्रकाशन 'नई दिशा' में हुआ, इस गद्य-गीत में उन्होंने संवेदनशील भाषा का प्रयोग किया है। गद्य में होने के बावजूद यह लयपूर्ण एवं अपने आपमें एक बेजोड़ गद्यगीत है।

रेणु की सर्जनात्मकता की चमक उनके पत्रों में भी दिखाई देती है। उनके पत्रों में उनके संस्मरण एवं डायरी भी दिखाई देते हैं। अपने पत्रों में वे कभी अपनी मनःस्थिति को रखते हैं तो कभी अपने जीवन की परिस्थितियों को व्यक्त करते हैं। उनके पत्रों में आस्था, विश्वास एवं उनके जीवन के करुण और हास्यास्पद प्रसंग भी दिखाई देते हैं। कथा साहित्य की भांति अपने पत्रों में भी वे कम शब्दों में बहुत गंभीर बात कह जाते हैं। रेणु ग्रामीण समाज से जुड़े हुए व्यक्ति हैं इसलिए उनके पत्र में गाँव, देहात, खेती-किसानी की बातें लिखी मिलती हैं। रेणु पर तरह-तरह के आरोप भी लगाए जाते हैं और उनको खारिज करने की तमाम कोशिशें भी होती रही हैं। अपने मन की टीस को भी वे अपने पत्रों में व्यक्त करते हैं।

रेणु एक अच्छे निबंधकार भी हैं। 'वह एक कहानी' इनका आत्मव्यंजक निबंध है। 'सामाजिक कार्यकर्ताओं से शब्द' में रेणु ने समाज को बेहतर बनाने के सुझाव दिए हैं। रेणु ने समाज के लोगों को सही राह पर लाने एवं एक दूसरे को सही राह दिखाने के लिए प्रेरित किया है। इनके निबंधों में सामाजिक, राजनीतिक एवं आर्थिक जीवन स्पष्ट रूप से दिखाई देता है।

रेणु की तीन नाटिकाएं 'उत्तर नेहरू चरितम' 'ये है आपकी पड़ोसिन: कवयित्री' 'पांच नंबर प्लेटफ़ॉर्म' आदि हैं। इनके नाटिकाओं के कथानक संक्षिप्त होने के कारण इनमें सांस्कृतिक तत्त्व विस्तृत रूप में नहीं दिखाई देते हैं। इन नाटिकाओं में कवि हृदय की भावुकता और स्त्रियों की आत्म सम्मान की चेतना के साथ-साथ भारतीय समाज में फैली धार्मिक विकृतियों को उद्घाटित करते वसुधैव कुटुम्बकम को अपनाने की आवश्यकता जैसे पक्षों पर भी बल दिया है।

2. प्रस्तावित विषय पर शोध की आवश्यकता:

वर्तमान समय में ग्रामीण व्यक्ति अपनी सभ्यता और संस्कृति से दूर होता जा रहा है, और रेणु की कृतियों में हमें ग्रामीण जीवन के संघर्ष भरे एवं शहर के भाग-दौड़ से विपरीत जीवन की छवि दिखाई देती है जिससे आज का नगरी एवं शहरी समाज बहुत हद तक अनिभिज्ञ है। आज का नगरी समाज जो अपने पूर्वजों के द्वारा बनाई गई परम्पराओं को धीरे-धीरे भूलता जा रहा है। वह अपनी जड़ों से कटता जा रहा है, एवं अपने लोक संस्कृति को भी भूल रहा है।

आज मनुष्य शहरी जीवन की चकाचौंध के प्रति अधिक आकर्षित है। उसकी ग्रामीण जीवन से अनिभिज्ञता उसे आंचलिक परिवेश से और भी दूर करती जा रही है। वह अनिभिज्ञ है उसकी थाली में हर शाम की रोटी के पीछे लगे परिश्रम से, वह नहीं जानता उस हर एक दाने के पीछे के परिश्रम को, जो हर दिन उसकी भूख मिटाती है। वह अपरिचित है उन खेतों और खलिहानों की हरियाली से जो हर व्यक्ति के जीवन का आधार है जिसे देखकर हर किसान प्रसन्न हो उठता है। आज का शहरी व्यक्ति तीज-त्योहारएवं अपनी सभ्यता संस्कृति को नीरस समझता जा रहा है। उसें ग्रामीण जीवन के त्योहारों की प्रथाओं के बारे में भी ज्यादा कुछ नहीं पता है। हमें रेणु का पूरा गद्य साहित्य उनके अंचल विशेष और भारत की सभ्यता संस्कृति, खेत-खलिहान, तीज-त्यौहार, लोकगीतों से भरा-पूरा दिखाई देता है।

ग्रामीण जीवन में त्योहारों में होने वाले मेल मिलाप, घर-घर लोगों का एक दूसरे से मिलने जाना, गावों में होने वाले लोक गीत जैसे होली के समय में होने वाले फाल्गुनी और चैती, ठुमरी ये सब ग्रामीण जीवन के अप्रतिम अंग के बारे में भी लोगों को जानकारी होनी चाहिए और इसके लिए हमें रेणु का साहित्य पढ़ने की आवश्यकता है। इस दृष्टि से यह शोध विषय वर्तमान समय में लोगों को अपने जड़ों से जोड़ने के लिए अत्यंत उपयुक्त प्रतीत होता है।

3. पूर्वकृत शोध-कार्य:

1. शोध विषय: -**फणीश्वरनाथ रेणु की कहानियों में यथार्थवाद एक आलोचनात्मक विश्लेषण**

शोधार्थी:- निवेदता नाथ

शोध-निर्देशक:-दिलीप कुमार मेधी

विश्वविद्यालय:- गौहाटी विश्वविद्यालय

2. शोध विषय:- **शिव प्रसाद सिंह और फणीश्वरनाथ रेणु के कथा-साहित्य में आंचलिकता की परिकल्पना**

शोधार्थी:- रमेश कुमार शुक्ल

शोध-निर्देशक:-डॉ. राम किशोर

विश्वविद्यालय:- हिंदी विभाग इलाहाबाद विश्वविद्यालय, इलाहाबाद

3. शोध विषय:- **फणीश्वरनाथ रेणु के कथा-साहित्य का समाजशास्त्रीय अध्ययन**

शोधार्थी:- श्रीमती सुनीता देवी यादव

शोध निर्देशक:- डॉ. बालकृष्ण शर्मा रोहिताश्व

विश्वविद्यालय:-गोवा विश्वविद्यालय

4. शोध-कार्य के स्त्रोत:

प्रस्तुत शोध-विषय पर शोध सामग्री एकत्रित करने हेतु बिहार एवं देश भर के सभी पुस्तकालयों का भ्रमण किया जाएगा। रेणु पर आधारित पुस्तकों एवं अन्य पूर्वकृत शोध कार्यों की मदद से शोध किया जाएगा। समय-समय पर बिहार एवं दिल्ली में पुस्तक मेलों का भ्रमण करके शोध-विषय से संबंधित समाग्री एकत्रित की जाएगी।

5. शोध-प्रविधि:

प्रस्तावित शोधकार्य के अध्ययन की पद्धति में सर्वप्रथम 'रेणु के कथेतर साहित्य में संवेदना और शिल्प' विषय से संबंधित उनके संपूर्ण कथेतर साहित्य का गूढ़ अध्ययन किया जाएगा। आलोचनात्मक और विश्लेष्णात्मक पद्धति का प्रयोग किया जाएगा । शोध परियोजना में अध्ययन की आगमनिक विश्लेषण पद्धति अपनाने के साथ-साथ इस शोध प्रबंध की मांग को देखते हुए कुछ ठोस निष्कर्षों की प्रबल संभावनाओं के साथ अध्यायों और उप-अध्यायों में बांटकर शोध कार्य का संपादन किया जाएगा।

6. प्रस्तावित अध्याय:

प्रथम- अध्याय:

रेणु का व्यक्तित्व और कृत्तित्व

द्वितीय- अध्याय:

रेणु के कथेतर गद्य का परिचयात्मक विश्लेषण

तृतीय- अध्याय:

रेणु के रिपोतार्ज और संस्मरण एवं रेखाचित्र में संवेदना और शिल्प

चतुर्थ- अध्याय:

रेणु के निबंध, डायरी और पत्र में संवेदना और शिल्प

पंचम- अध्याय:

रेणु के अन्य कथेतर साहित्य में संवेदना और शिल्प

उपसंहार

संदर्भ ग्रंथ सूची

7. शोध-संबंधी पूर्वकल्पना/ संभावित निष्कर्ष:

फणीश्वरनाथ रेणु हिंदी साहित्य के महत्वपूर्ण रचनाकार हैं । उनकी प्रसिद्धि कथा साहित्य को लेकर है। उनका उपन्यास 'मैला आँचल' हिंदी साहित्य की अमूल्य धरोहर है, जो आंचलिक उपन्यासों में अपना महत्वपूर्ण स्थान रखता है। रेणु की प्रसिद्धि उनके उपन्यासों एवं कहानियों को लेकर विशेष रूप से है फिर भी उनका कथेतर साहित्य में भी महत्वपूर्ण स्थान है । उनके रिपोतार्ज, संस्मरण, रेखाचित्र, आत्मकथा, जीवनी, पत्र, डायरी आदि में भी उनके अंचल एवं उनकी लेखकीय प्रतिभा विशेष रूप से झलकती है। उन्होंने अपने रिपोतार्ज में अपने भोगे हुए यथार्थ एवं अपने अनुभव को व्यक्त किया है तो दूसरी तरफ उनके संस्मरण में उन्होंने महान पुरुषों के साथ बिताए गए अपने जीवन के अनुभव को साझा किया है। उनके पत्रों में भी हमें उनकी मनोवृत्तियों की ही अभियक्ति मिलती है। रेणु जैसे महान रचनाकार के लेखन की संपूर्ण विविधताओं को व्यक्त करना इस शोध विषय की पूर्वकल्पना है । उनके कथेतर साहित्य में व्यक्त उनकी लेखन की विविध शैली और शिल्प को शोध के माध्यम से सामने लाना इस शोध विषय की पूर्वकल्पना है।

9. संभावित संदर्भ-ग्रंथ सूची:

आधार ग्रंथ:

1. रेणु, फणीश्वरनाथ; कवि रेणु कहे; राजकमल प्रकाशन प्रा.लि.नेताजी सुभाष मार्ग, दरियागंज नई दिल्ली पटना

2. रेणु, फणीश्वरनाथ; ऋणजल धनजल; राजकमल प्रकाशन प्रा.लि.नेताजी सुभाष मार्ग, दरियागंज नई दिल्ली

3. रेणु, फणीश्वरनाथ; नेपाली क्रान्ति कथा; राजकमल प्रकाशन प्रा.लि.नेताजी सुभाष मार्ग, दरियागंज नई दिल्ली

4. रेणु, फणीश्वरनाथ; वन तुलसी की गंध; राजकमल प्रकाशन प्रा.लि.नेताजी सुभाष मार्ग, दरियागंज नई दिल्ली

5. रेणु, फणीश्वरनाथ; समय की शिला पर; राजकमल प्रकाशन प्रा.लि.नेताजी सुभाष मार्ग, दरियागंज नई दिल्ली

6. यायावर, भारत; (सं.) रेणु रचनावली खंड-1; राजकमल प्रकाशन प्रा.लि. नेताजी सुभाष मार्ग, दरियागंज नई दिल्ली

7. यायावर, भारत; (सं.) रेणु रचनावली खंड-2; राजकमल प्रकाशन प्रा.लि. नेताजी सुभाष मार्ग, दरियागंज नई दिल्ली

8. यायावर, भारत; (सं.) रेणु रचनावली खंड-3; राजकमल प्रकाशन प्रा.लि. नेताजी सुभाष मार्ग, दरियागंज नई दिल्ली

9. यायावर, भारत; (सं.) रेणु रचनावली खंड-4; राजकमल प्रकाशन प्रा.लि. नेताजी सुभाष मार्ग, दरियागंज नई दिल्ली

10. यायावर, भारत; (सं.) रेणु रचनावली खंड-5; राजकमल प्रकाशन प्रा.लि. नेताजी सुभाष मार्ग, दरियागंज नई दिल्ली

11. रेणु, फणीश्वरनाथ; आत्मपरिचय; राजकमल प्रकाशन प्रा.लि. नेताजी सुभाष मार्ग, दरियागंज नई दिल्ली

सहायक ग्रंथ:

1. लतिका; रेणु संस्मरण और श्रद्धांजलि; नवनीत प्रकाशन, पटना

2. मोहम्मद, डॉ. अली; हिंदी रिपोतार्ज: परंपरा और मूल्यांकन; फस्ट एडिसन; नई दिल्ली

3. सहाय, कामेश्वर शरण; हिंदी का संस्मरण साहित्य; विश्वविद्यालय प्रकाशन, विशालाक्षी बिल्डिंग चौक वाराणसी

4. यादव, डॉ. वीरेंद्र सिंह; लोक साहित्य: परंपरा की प्रासंगिकता एवं सामाजिक परिप्रेक्ष्य; ओमेगा पब्लिकेशन, नई दिल्ली

5. डॉ. कुमार, ऋषि; रेणु का कथेतर साहित्य: समाज संस्कृति; अमन प्रकाशन, 104-A/80 तुलसी मस्जिद चौराहा,राम बाग, कानपुर

6. तिवारी, डॉ. रामचंद्र; हिंदी निबंध और निबंधकार; विश्वविद्यालय प्रकाशन, विशालाक्षी बिल्डिंग चौक वाराणसी

7. तिवारी, डॉ. सियाराम; (सं.); रेणु: कृत्तित्व और कृतियाँ (रेणु स्मृति खंड-2); नवनीत प्रकाशन, पटना

8. प्रसाद, डॉ. शिवचंद; फणीश्वरनाथ रेणु की राजनीतिक चेतना; अनंग प्रकाशन, दिल्ली

9. बाहेती, डॉ. कंचनमाला; फणीश्वरनाथ रेणु के कथा साहित्य में आंचलिक तत्त्व; चंद्रलोक प्रकाशन, मयूर पार्क, वसंत विहार कानपुर

10. मिश्र; डॉ. राजेन्द्र प्रसाद; आंचलिकता की कला और कथा साहित्य; प्राची प्रकाशन, नई दिल्ली

11. यायावर, भारत (सं.); रेणु का है अंदाजे बयां और; राजकमल प्रकाशन प्रा.लि. नेताजी सुभाष मार्ग, दरियागंज नई दिल्ली

12. कौल, हरिकृष्ण; फणीश्वरनाथ रेणु की कहानियां शिल्प और सार्थकता; पराग प्रकाशन, दिल्ली

13. यायावर, भारत; फणीश्वरनाथ रेणु कथा का नया स्वर; नई किताब पंचशील गार्डन, नवीन शाहदरा दिल्ली

14. दुबे, हरिशंकर; फणीश्वरनाथ रेणु: व्यक्तित्व एवं कृत्तित्व; विकास प्रकाशन, साकेत नगर, कानपुर

ख) पत्र-पत्रिकाएँ:

1. आजकल; संपादक; सीमा ओझा, प्रकाशन विभाग; लोदी रोड, नई दिल्ली; लेख: रेणु के रिपोतार्जों में अभियक्त उनका जीवन एवं परिवेश- भारत यायावर

2. परिषद; संपादक; डॉ. रामधारी सिंह दिनकर; फणीश्वरनाथ रेणु विशेषांक; जुलाई-दिसंबर, 2009

3. मुक्तांचल; संपादक; मृत्युंजय पाण्डेय; रेणु शतवर्ष विशेषांक

4. कथादेश; संपादक; राकेश बिहारी; रेणु जन्म-शती विशेषांक; फरवरी, 2021

5. प्रयाग पथ; संपादक; कुमार वीरेंद्र; रेणु विशेषांक; जनवरी, 2021